INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2022

अज्ञेय के कथा साहित्य में शोषण के विरुद्ध सामाजिक विचलन

सविता गुप्ता[1] & डॉ. प्रेमशंकर शुक्ल[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.आर.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय हनुमना, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

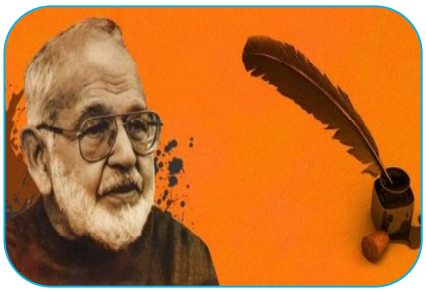

अज्ञेय की मान्यता है कि समाज में समता स्थापना के लिए ऊँच नीच छोटे बड़े अमीर गरीब व्यक्ति कोई भी रेखा न खींची जाय। वह शिक्षा जाति प्रथा निर्बल, सबल, नर–नारी, धनी निर्धन के बीच वर्ग भेद को रेखांकित करने वालों को घृणा की संज्ञा देते है। भाई को अछूत व बहन को अविकसित समझकर आगे बढ़ जाने वाले बड़े बड़े संत साहूकार गरीब निर्बल के रक्त के शोषक सांमतीय प्रवृतिधारा महापुरूष, जनता के दोहक, अफसरशाह, लालफीतासाही का निम्न समुदाय के प्रति किये गये व्यवहार के कारण इसके प्रति तीखी आक्रोश की अभिव्यक्ति की है।

मुख्य शब्द – अज्ञेय, कथा साहित्य, शोषण एवं सामाजिक विचलन ।

प्रस्तावना –

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज के उत्थान पतन में साहित्य का अत्यधिक योगदान रहता है। इस बात का गवाह भारतीय अपितु वैश्विक साहित्य भी है। फ्रांसीसी और रूसी क्रांति इसके उदाहरण है। प्रस्तुत विवेचन में अज्ञेय का स्थान महत्वपूर्ण है। उनके शेखर : एक जीवनी उपन्यास में नायक विद्रोही नायक है। सामाजिक विधान एवं प्रचलित मान्यताओं के विरूद्ध उसमें जबरजस्त विरोध रहता है और उन्हें समूल उजाड़कर वह अपना जीवन दर्शन व्यक्तिवादी आंशिक रूप से आस्तित्ववादी व नियतिवादी स्थापित करना चाहता है। मैने देखा सर्वत्र कलुष, भास है, पतन है कि अकेला समाज ही नहीं मानव जीवन अमूल दूषित है। ईश्वर मानव सब कुछ अमूल दूषित खड़ा हुआ है। लेखक ने यहाँ सामाजिक दूषणों के प्रति सामाजिक चेतना का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया है।

अज्ञेय ने अपने कथा साहित्य में जीवन को सामान्य भूमि पर प्रतिष्ठित किया है। अपने उपन्यासों में मानव जीवन के चित्रण को केन्द्र बनाया है। उन्होंने 'शेखर : एक जीवनी' में विशेष कर किसान एवं मध्यमवर्ग आदि के जीवन समस्याओं को अपने उपन्यासों का केन्द्रीय विषय बनाकर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। समाज के पीड़ित एवं, शोषित के लिए भी उनके हृदय में सच्ची सहानुभूति थी, सामाजिक विषमताओं, अत्याचारों और उत्पीड़न के वास्तविक चित्र उनके उपन्यास में अत्र तत्र अंकित है। अज्ञेय के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य केवल पाठकों का मनोरंजन करना नहीं है, अपितु मनोरंजन करते हुये पाठकों के हृदय का परिष्करण करना भी है।

अज्ञेय के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना के अर्न्तगत व्यक्ति और समाज शोषण के विरूद्ध सामाजिक विचलन, चलन, यौन कुंठाओं से युक्त पुरूष सम्बंध के विभिन्न कसौटियाँ धार्मिक चेतना, मृत्यु, भाग्य, नैतिकता, सांस्कृतिक क्षेत्र जैसे बहु बिधि धारणाओं को व्यापक आयाम मिलता है, जिसका विवेचन विषयवस्तु और विवेच्य क्रम में किया जाना यथेष्ठ है। अज्ञेय ने व्यक्ति और समाज के संबंधो को यथार्थ के धरातल पर उतरकर पड़ताल की है। उन्होंने व्यक्ति के जीवन पर समाज की देव मूलक स्थितियों के व्यापक प्रभाव को बहुत ही करीब से देखा और महसूस किया। तत्पश्चात अपनी सामाजिक रचनाओं में प्रतिविम्बित किया है। अज्ञेय व्यक्ति को समाज की मूल इकाई मानते है।

कहानी के माध्यम से अज्ञेय कहते हैं कि समाज में जो मानवीयता का ह्रास हो रहा है, उसका कारण केवल मनुष्य है। वह समस्त समस्याओं को अपने ऊपर ओढ़ लेता है। वह अपने अन्दर की बुराइयों की तरफ ध्यान आकृष्ट करने के बजाय समाज को दोषी सिद्ध करने में लगा रहता है। 'जिज्ञासा'[1] कहानी में आदिमकाल के जीवन के प्रति जिज्ञासा का भाव इस कहानी में व्यक्त हुआ है। प्रस्तुत कहानी में लेखक तटस्थ रहकर सृष्टि की रचना का वर्णन करता है।

आर्थिक–पराधीनता, सामाजिक–अत्याचार तथा व्यवस्थाजन्य विसंगतियों के नेपथ्य में व्यक्ति की कुण्ठा, संत्रास, भय, और मानवीय संघर्ष को बहुविध रूपों में उकेर कर मानवीय रोपण के विविध पहलुओं को सामने लाते है। व्यक्ति और समाज परस्पर पूरक और अन्योन्याश्रित हैं। व्यक्ति के बिना समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती और समाज के बिना व्यक्ति उत्तरोत्तर मानवीय मूल्यों से अभिसिंचित नहीं हो सकता।

अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज के संबंधों और वैयक्तिकता एवं सामाजिकता की अन्तः क्रियाओं की विभिन्न घटनाओं के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयोगात्मक प्रयास रहा है। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में कम से कम ग्यारह स्थल ऐसे है जहाँ द्वीप (व्यक्ति) और (नदी) समाज के रूपक के रूप में उल्लेख आया है। यह जो जन समुदाय से घिरे होकर भी उससे अलग जाकर किसी अलक्षित शक्ति के स्पर्श से रोमांचित हो उठने जैसी बात उसने देखी थी। रह रह कर वही भुवन को झंकझोर जाती थी जैसे किसी बड़े चौड़े पाट वाली नदी में एक छोटे से द्वीप का बऊ पल्लवित मुकुट किसी को अनपेक्षिता से चौंका जाता।[2]

व्यक्तिवादी विचारधारा के पोषक शेखर में शोषण के विरूद्ध विचलन को पर्याप्त स्थान मिला है। शेखर के कथा साहित्य के पात्र सामाजिक शोषण के विविध पहलुओं स्पष्टतया महसूस करते है। निम्न जातीय विधवा के यहाँ जाने तथा उसकी बेटी कुल के साथ खेलने के लिए शेखर को मनाही की जाती है। किन्तु इसका मन सहानुभूति के कारण आप्लावित हो जाता है जिसका परिणाम वह हो जाता है कि शेखर उस विधवा की पूजा तक करने लग जाता है तथा फूल भी उसके लिए पद दलित देवी सी हो गयी है कालेज जीवन में शेखर मलवार प्रदेश की यात्रा भाग इसलिए करता है कि ब्राह्मणों द्वारा शोषित अछूतों का रोपण प्राप्त कर सके वहाँ मरणासन्न नारी को पीठ पर लाद कर वहा अस्पताल पहुँच जाता है तथा एक असहाय महिला को गाड़ी में चढ़ाने में सहायता करता है। जिसके लिए उसे एक दूसरे व्यक्ति से झगड़ना भी पड़ता है।

विश्लेषण –

अज्ञेय के हृदय में मानव जाति के लिए सर्वाधिक चिंता थी। वह अपने साहित्य हृदय को आधार बनाकर समाज पर होने वाले अत्याचारों को पूर्णतः दूर करना चाहते थे। 1940 और 1941 के आसपास भारतीय जनजीवन में दमन गतिरोधक मँहगाई, भ्रष्टाचार आदि ने मानव जीवन में उथल पुथल मचा दी थी। ऐसे में लेखक ने समाज की स्थिति आर्थिक असमानता एवं विषमताओं के आक्रोश, क्षोभ, एवं घृणा ही नहीं व्यक्त की अपितु आलंबन के द्वारा इसे जड़ से मिटाने का प्रयास भी किया। सामाजिक क्रांति का आवाहन किया। समाज में सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता पैदा की एवं जन आन्दोलन किया। लेखक का अग्नि धर्म ही रक्त पूर्ण संघर्ष का आवाहन है। जन आंदोलन की प्रेरणा है, मजदूरों, कामगारों और श्रमजीवियों को जगाने वाला धर्म है। जो लोग रात दिन अधाधुंध मेहनत मजदूरी करके भी भर पेट भोजन के पात्र नहीं बन पाते। वह चाहते थे कि मनुष्य मनुष्य के प्रति सौहार्द की स्थापना हो, प्रत्येक व्यक्ति का विकास हो तथा मनुष्यता को पीड़ित एवं शोषित करने वाले जो भी तत्व है उनका अज्ञेय ने विरोध किया।

प्रो. विजय मोहन सिंह के शब्दों में, 'अज्ञेय' के लिए कहानी घटना नहीं, जीवन की अनुभूति है। यथार्थ के विविध स्तरों की अनुभूति कहानी और जीवन को एकाकार कर देती है। इस भांति 'अज्ञेय' के यहाँ 'कहानी' कहानी न होकर आत्मान्वेषण का माध्यम है।[3]

व्यक्तिवादी चेतना और आत्मिक विद्रोह को अज्ञेय ने मनोविश्लेषण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इन्होंने व्यक्ति की मानसिकता को एक ठोस सत्य का रूप दिया है 'अनुभवसिक्त लेखन' पर बल देने के कारण अज्ञेय अधिकाधिक आत्मकेन्द्रित और अन्तर्मुखी हो गये हैं।

अज्ञेय की नारी स्वयं के सन्दर्भ में समाज के सन्दर्भ में या किसी राजव्यवस्था विशेष के सन्दर्भ में अपने हृदयों में व्रिदोह की भावना लेकर अवतरित हुई है। 'कोठरी की बात', 'रोज', 'दुःख और तितलियां', 'सूक्ति और भाष्य', 'परम्परा–एक कहानी', 'सभ्यता का एक दिन', 'पगोड़ा वृक्ष', 'छाया', 'एक घंटे का समय', 'एकाकी तारा', 'शांति हंसी थी', 'जीवन शक्ति' में उनकी मानसिकता द्रष्टव्य है।

डॉ. देवराज उपाध्याय की मान्यता है कि – "अज्ञेय के कहानी साहित्य में अधिकतर उसी मानसिक स्तर के भावों की उसी गहराई का आग्रह है जहाँ पर आकर वे शब्दातीत और अबौद्धिक रूप धारण कर लेते हैं। मात्र अनुभूति संवेद्य हो जाते हैं अर्थात अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित सम्बन्ध अव्यक्त अधिक हैं जो मात्र अनुभूत भर हैं और जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।"[4]

सामन्तवादी मूल्यों की शिकार स्त्री की परवशता और पारिवारिक घुटन की मानसिकता को अज्ञेय ने गहरी अन्तर्दृष्टि और आत्मीयता से देखा तथा इसी के परिणामस्वरूप वे ग्रेंगीन की 'मालती' और 'कवि प्रिया' की शांति की पीड़ा को और प्रकारान्तर से पूरे स्त्री समाज की पीड़ा को, प्रभावी सक्षम ढंग से उकेर सके।[5]

'पगोड़ा वृक्ष' में ऐसी ही क्रांतिकारी विधवा–युवती की मानसिकता का चित्रण है जिसके हृदय में न सिर्फ आकर्षण की अनाम लहर उठती है वरन् अपने कथित उत्सर्ग से उसमें एक गहरा और तात्विक परिवर्तन भी आता है। 'सुखदा' के चरित्र से मानवीय सम्बन्ध की किरण तब चमक उठती है जब उसे मालूम होता है कि संध्या समय आकर, रात भर रहकर सुबह होने से पूर्व ही चले जाने वाला क्रांतिकारी उसका पति सूर्यकान्त ही है, जिसे वह मृत समझी थी। रात रात में पगोड़ा वृक्ष ने पुरानी केंचुल उतार फेंकी थी या नये वस्त्र धारण कर लिए थे, वह फूलों से भरा हुआ सौन्दर्य से आवृत्त सौरभ से झूम रहा था।[6]

रोज' कहानी में एक बेगाना सा वातावरण, आन्तरिक उदासीनता को अत्यन्त सघन बना देता है, 'ऐसा तो रोज होता है, यह वाक्य स्त्री मानसिकता की टूटन और घुटन को प्रभावपूर्ण ढंग से सार्थक कर देता है।[7]

अज्ञेय का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण फ्रायड से प्रभावित है। ईगो अज्ञेय की चेतना में अत्यन्त प्रबल ओर सशक्त रूप में विद्यमान है। अहं और विद्रोह अज्ञेय के कथा चरित्रों की सर्वप्रथम विशिष्टताएं हैं। 'हजामत का साबुन', 'बन्दों का खुदा', खुदा के बन्दे, 'लेटर बॉक्स', 'कविता और जीवन', 'एक कहानी', 'आदम की डायरी', 'अलिखित कहानी', 'नम्बर दस', 'सिगनेलर', 'अमरवल्ली' आदि इसी प्रकार की कहानियाँ हैं।

आज के मानवीय सम्बन्ध जीवन के तनाव, एकाकीपन, विघटन, अजनबीपन और व्यर्थता आदि के एहसास के कारण बदलते जा रहे हैं। यहां तक कि पिता–पुत्र, माँ–बेटी, पति–पत्नी और भाई–बहन जैसे निकटतम सम्बन्ध भी अब टूट चुके हैं। इन सबके भीतर के एकाकीपन, अजनबीपन और तनाव आदि ने इन्हें एक दूसरे के लिए अजनबी बना दिया है। अज्ञेय के कथा साहित्य के पात्रों ने कामायुक्ति की विभिन्न समस्याओं से प्रेरित होकर स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों के रूढ़ नैतिक मूल्यों को ध्वस्त कर दिया है। नये वैयक्तिक सम्बन्धों के उद्घाटन से नैतिक संहिताओं का निकष चकनाचूर हो गया है। अज्ञेय के नारी चरित्र शशि, रेखा और गोरा का चरित्र और उनकी मानसिकता द्रष्टव्य है।

अज्ञेय के नारी चरित्र व परिवेश और युग जीवन की विडम्बनाओं, परम्परागत मूल्यों की टूटन की मानसिकता दिखाई देती है। 'शरणदाता' कहानी में अपने पूरे परिवार की इच्छा और योजनाओं के विरोध में जाकर देविन्दर लाल के प्रति जैन की सदाशयता और करुणा काफी कुछ आरोपित और भावुक आदर्शवाद से परिचालित लगती है।

निष्कर्ष –

अज्ञेय की कहानियों और उपन्यासों में शोषण के विरुद्ध आवाज उठायी गई है। अज्ञेय का मन आदर्शवादी जीवन दृष्टि के कारण सबसे अधिक स्त्री और प्रेम सम्बन्धों के जीवन में रमा है। अज्ञेय का

दृष्टिकोण अलौकिक और अशरीरी किस्म का है। इनकी मान्यता है कि जीवन में स्त्री का कोमल–संस्पर्श मात्र जीवन की समूची गति और दिशा को बदल सकने में सक्षम होता है। जीवन में उसके 'होने' भर से लगता है कि आसपास चारों ओर हरसिंगार के फूल रहे हैं। स्त्री के बिना कुछ भी अच्छा नहीं है, कुछ भी मधुर नहीं है, कुछ भी सुन्दर नहीं है, स्त्री, जो केवल स्त्री ही नहीं है, संसार की कुल सुन्दर और मधुर वस्तुओं की प्रतिनिधि है।

संदर्भ –

[1] अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ–जिज्ञासा, पृष्ठ 19
[2] अज्ञेय – नदी के द्वीप, पृष्ठ 12
[3] विजय मोहन सिंह – अज्ञेय कथाकार और विचारक, पृष्ठ 72
[4] डॉ. देवराज उपाध्याय – आधुनिक कथा साहित्य और मनोविज्ञान, पृष्ठ 20
[5] विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – अज्ञेय, पृष्ठ 175
[6] अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां, भाग–1, पगोड़ा वृक्ष, पृष्ठ 433
[7] डॉ. गोरधन सिंह शेखावत – नयी कहानी : उपलब्धि और सीमायें, पृष्ठ 13–14.